कवर पेज सहित 36 पृष्ठ | वर्ष 25 | अंक 06 | अगस्त, 2019 | मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

भाई-बहिन रिश्ते का अटूट धन पावन त्योहार रक्षा-बंधन

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

संयोजना :
साध्वी कनकलता
साध्वी वसुमती

परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :
अरुण कुमार पाण्डेय

सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये
आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक
अरूण तिवारी
मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने,
नई दिल्ली - 110013
फोन नं. : 26345550, 26821348
Website : www.rooprekha.com
E-mail : contact@manavmandir.info

इस अंक में

धर्म को वर्तमान से जोड़ लें, जीवन खुशहाल हो जाएगा

धर्म करते हुए भी जीवन में कोई परिवर्तन नहीं है, कोई क्रांति नहीं है। इसलिए जीवन में शांति नहीं है। क्रांति केवल वर्तमान में ही घटित हो सकती है। वह भूत और भविष्य में कहीं संभव नहीं है। इसलिए हम अपने को वर्तमान से जोड़ें। वर्तमान को सजाएं-संवारें। हम खुद महसूस करेंगे कि हमारा जीवन आनंदमय हो रहा है, सब कुछ स्वर्ग जैसा लग रहा है। समाज और मनुष्यता के बारे में दृष्टि बदल रही है। बस, धर्म को जीवन से और वर्तमान से जोड़ कर देखें, आप प्रेम और क्षमा से भर जाएंगे। 06

विश्वआत्मा के साथ तादात्मय की सघन अनुभूति है मैत्री

वास्तव में मैत्री वही होती है, जो प्राणिमात्र के साथ हो। जो खण्ड-खण्ड विभक्त है, वह मैत्री नही, प्रेम होता है। प्रेम मोहमय भी हो सकता है और अमोहमय भी। मैत्री में मोह या अमोह की कोई पुट नहीं होती। वह विश्वात्मा के साथ तादात्मय की सघन अनुभूति है। जब तक मनुष्य सबके साथ मैत्री का अनुभव नही करेगा मैत्री की बात अधूरी रहेगी। जब तक विश्व के किसी भी प्राणी के थोड़ी भी किन्तु-परन्तु की भावना रहेगी, विराट मैत्री फलित नहीं होगी। 09

ऊर्जा का स्रोत है स्वस्तिक

स्वस्तिक विष्णु, सूर्य, सुष्टिचक्र, सम्पूर्ण, ब्रह्माण्ड, गणेश व सुदर्शन चक्र का प्रतीक चिन्ह है। अर्थात श्रेष्ठ+शुभ+शक्ति का समन्वय। पावसी चातुर्मास में अष्टदल कमल से स्वस्तिक बनाकर नित्यपूजा भी पदम पुराण में निर्देशित है। सिन्धुघाटी की सभ्यता की खुदाई में मिले पात्रों में स्वस्तिक चिन्ह पाया गया है। जैन परम्परा में अष्ट मंगल द्रव्यों में स्वस्तिक का स्थान सर्वोपरि है। बौद्धमत में भी स्वस्तिक को मंगल चिन्ह माना गया है। इस प्रकार प्राचीनता व्यापकता और महत्व स्वयं सिद्ध है। 16

बीमारियों से निजात दिलाता है जामुन

• जामुन में एंटी कैंसर के गुण भी पाये जाते हैं। कीमोथेरेपी और रेडिएशन में भी जामुन फायदेमंद होता है।

• जामुन का पका हुआ फल खाने से पथरी में फायदा होता है। जामुन की गुठली के चूर्ण को दही के साथ मिलाकर खाने से पथरी में फायदा होता है। लीवर के लिए जामुन का प्रयोग बहुत फायदेमंद होता है। कब्ज और पेट के रोगों के लिए जामुन बहुत फायदेमंद होता है। 23

आज ही वो दिन है सुखी होने का

मेरे पास लोग आते हैं, वे कहते हैं, हम सुखी होना चाहते हैं। आप हमें रास्ता बताएं। मैं उनसे कहता हूं रास्ता तो सुगम है। तुम होना चाहते हो, ये पक्का कर लो। अगर तुमने होने का तय ही कर लिया है, तो बिना रास्ते के भी हो जाओगे। कौन किसको रोक पाया सुखी होने से? रास्ता भी बाधा नहीं बनेगा, रास्ते की भी जरूरत न रहेगी।

लेकिन अगर तुम होना ही न चाहो और ये रास्ते की पूछताछ सिर्फ अपने दुख की चर्चा करने का ही एक ढंग हो, ये रास्ते की पूछताछ अपने दुख का ही वर्णन करने का उपाय हो, ये रास्ते की पूछताछ मेरी सहानुभूति के लिए हो, तो फिर कोई उपाय नहीं है। तो फिर व्यर्थ रास्ते की चर्चा ही मत करो, तुम्हें जो वर्णन करना है कर दो, मैं सुन लूं। तुम अपने दुख की कथा कह दो। अगर सहानुभुति चाहते हो, तो दुख की कथा कहो, झंझट खतम हो। लेकिन अगर दुख को बदलना है, तो अड़चन नहीं है। मगर तुम्हारे विपरीत में कुछ भी न कर सकूंगा। तुम्हारे विपरीत कोई भी कुछ नहीं कर सकता है। तुम अपनी गहराई में अपने मालिक हो। इसलिए मैं तुमसे न कहुंगा कि विषाद तुम्हारे भाग्य में लिखा है। तुम लिख रहे हो। रोक लो हाथ।

और एक आखिरी बात इस संबंध में कि जीवन कुछ ऐसा है, जैसे जल पर तुम कुछ लिखते हो- लिख भी नहीं पाते कि मिट जाता है। फिर कोई रेत पर कुछ लिखता है- लिखता है, एकदम नहीं मिट जाता, हवा का झोंका आयेगा, समय लगेगा, मिट जाएगा। फिर कोई पत्थर पे लिखता है- हवा के झोंके भी आते रहेंगे, सदियां गुजरेंगी और न मिटेगा। मैं तुमसे कहता हूं, जीवन कुछ पानी-जैसा है। तुम लिखते ही रहो, लिखते ही रहो, लिखते ही रहो, तो ही अक्षर बने रहते हैं। तुम जरा रुको कि गये। जैसे कोई साइकिल चलाता है, पैडल मारता ही रहे तो चलती है। जरा पैडल रोक ले, थोड़ा बहुत चल जाए- पुराने आधार पर! बहुत सालों से चल रहे थे साइकिल पर बैठे, तो थोड़ी गति साइकिल में होगी वो चल जाएगी, थोड़ा ढाल-ढलान होगा चल जाएगी। मगर कितनी चलेगी? जल्दी ही गिर जाएगी।

प्रतिपल तुम अपने जीवन को बनाते हो, प्रतिपल बनाते हो। ये धंधा हर घड़ी का है। तुम जिस दिन राजी हो गये रोकने को अगर मन भर गया है विषाद से, अगर रस चुक गया है विषाद से, अगर विषाद के आधार पर सहानुभूति और ध्यान आकर्षित करने की इच्छा चली गयी है, तो मैं तुमसे कहता हूं आज ही वो दिन है-

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन-सारांश

❍ रुचि आनंद

मनुष्यता विरोधी विचारों से समाज को बचाना होगा

आज देश-समाज, आस-पड़ोस और दिल-दिमाग के अंदर-बाहर जो असमानता है, जाति-धर्म के नाम पर जो अनीति का प्रदर्शन और प्रदूषण है, उसके लिए हम चिंतित जरूर होते हैं, लेकिन उसके उद्‌गम तक जाने का कोई प्रयास नहीं करता है। सब कुछ खुली आंखों के सामने होता रहता है। या तो हम समाधान से आंखें चुराते हैं या 'क्या फर्क पड़ता है' के साथ हो जाते हैं। यह स्थिति ईमानदार विश्लेषण और तटस्थ पड़ताल मांगती है। जयप्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति दिवस पर आयोजित एक सभा में जातिवाद और संप्रदायवाद के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने के लिए युवा पीढ़ी का आह्वान किया था। जाति के नाम पर होने वाले अमानवीय अत्याचारों पर प्रहार करते हुए उन्होंने इस संदर्भ में भगवान बुद्ध और महावीर का स्मरण किया था। गांधीजी के बाद जेपी ने भारत की नब्ज को पहचानते हुए विचार और मन के सभी स्तरों से कुरीतियों तथा कमजोरियों को समाप्त करने पर बल दिया।

भगवान महावीर ने दास प्रथा, यज्ञों में पशु बलि, नारी की शोचनीय अवस्था की तरह जातिवाद पर भी कड़ा प्रहार किया था। उन्होंने स्पष्ट स्वर में उद्‌घोषित किया था कि मनुष्य कर्म से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होता है, जन्म से नहीं। यह प्रहार शब्दों तक सीमित नहीं था अपितु हरिकेशबल, अर्जुनमाली जैसे शूद्रवर्गीय व्यक्तियों को अपने धर्म-शासन में प्रव्रज्या देकर उन्होंने जातिवाद की जड़ों को उनके अंतिम अवशेषों तक खोद डाला। महावीर ने परंपरा के विरुद्ध जाकर अपने भिक्षुओं से कहा कि जैसा उपदेश कुलीनों को देते हो, वैसा ही बाकियों को दो।

उन्होंने अपने धर्म-शासन में कुलीनों

और अकुलीनों को समान अधिकार ही नहीं दिया बल्कि भविष्य के लिए प्रतिष्ठापित भी किया। कुलीनता पर गर्व करने वालों पर इंगित कर कहा कि यह आत्मा अनेकशः श्रेष्ठ तथा हीन कुलों में जन्म ले चुका है। श्रेष्ठ कुलों में जन्म लेने से वह श्रेष्ठ नहीं हो जाता और हीन कुलों में जन्म लेने से वह हीन नहीं हो जाता है। महावीर के जीवन को देखें तो वह हर समय और हर जगह मेरा और तेरा के व्यूह तोड़ते हुए मिलेंगे। उनके पास 'मेरी' नाम की कोई चीज ही नहीं थी। उनकी स्पष्ट घोषणा है कि 'एगा मणुस्स जाई' यानी मानव की एक ही जाति है, शेष सारे आचार-व्यवहार से संबद्ध हैं, जन्म से नहीं।

महावीर और बुद्ध के ढाई हजार वर्ष तो दूर की बात है, हम गांधी, आंबेडकर और जयप्रकाश की मान्यताओं और योगदानों का भी पालन नहीं कर पा रहे हैं। जाने-अनजाने मनुष्यता विरोधी जिन विचारों को हवा दी जा रही है, उससे समाज को बचाने की जरूरत है। आज हम पर नए सिरे से समतामूलक समाज बनाने की जिम्मेदारी आ गई है। बस एक ही पहल काफी है कि हम नफरत, निराशा और अवसाद के बंद कमरों की खिड़कियां खोलने का प्रयत्न करें। उसमें शुद्ध हवा को आने का मौका दें। हम महसूस करेंगे कि हवा के साथ कोई नई चेतना दस्तक दे रही है। इस चेतना के धरातल पर आकर 'मेरा' और 'तेरा' का भाव खत्म हो जाता है। यहीं से कर्मवाद शुरू हो जाता है। महावीर ने समतामूलक पुरुषार्थ को व्यक्ति के लिए अनंत आनंद का द्वार बताया। पुरुषार्थ का मतलब ही है अपना किया हुआ कर्म। यह हमेशा बोध कराता है कि क्या सही है और क्या गलत।

धर्म को वर्तमान से जोड़ लें, जीवन खुशहाल हो जाएगा

आज की सबसे बड़ी लाचारी यह है कि दिन विवादों से शुरू होता है और रात कोहराम पर जाकर खत्म होती है। हमारे आस-पास एक ऐसा भंवर बन गया है जो सबके दिल-दिमाग को नचा-घुमा रहा है। इस विवाद से सबसे बड़ा नुकसान धर्म, समाज और मनुष्यता का हो रहा है। कथित धर्मगुरुओं और पंथों की लाचारी देखिए कि वे माहौल को मानवीय बनाने में असफल साबित हो रहे हैं। जब धर्म के अर्थ की महत्ता पर ही सवाल उठने लगे तो मानना चाहिए कि धर्म इहलोक से उठकर सिर्फ परलोक पर जाकर टिक गया है।

धर्म जब स्वार्थ का साधन बन जाता है तब उसका स्वभाव, सहजपन और उद्देश्य कहीं गुम हो जाता है। हर धर्मप्रवर्तक ने धर्म को जीवन से जोड़ा किंतु धर्म-परंपराओं ने

उसे स्वर्ग और नरक, पाप और पुण्य से जोड़ दिया। यहीं धर्म अपने असली केंद्र से विचलित हो गया। हम भूल गए कि धर्म का मूल केंद्र वर्तमान है, न कि भूत और भविष्य। हम वर्तमान को कैसे जिएं, धर्म का सारा दर्शन इसी पर टिका हुआ है। वर्तमान अगर सुखमय है तो भविष्य भी सुखमय होगा। मतलब, भविष्य वैसा होगा, जैसा हमारा वर्तमान है। इसलिए धर्म का असली प्रयोजन वर्तमान को सजाने-संवारने का होना चाहिए। उस केंद्रीय विचार से भटक जाने के कारण ही धर्म भूत और भविष्य में उलझ गया। वर्तमान को उसने बिल्कुल ही भुला दिया। इसलिए लोगों ने वर्तमान को केवल अतीत का परिणाम मान लिया।

इसी से भाग्यवाद की विचारधारा का जन्म हुआ। भाग्य को बदला नहीं जा स्कता, इसलिए लोग वर्तमान से विमुख हो गए और भविष्य की चिंता में पड़ गए। ऐसा मान लिया गया कि जिनके पास कोठी, बंगला, मोटर, अनवरत देश-विदेश की यात्रा आदि सुख-सुविधा के साधन हैं, वे अतीत के पुण्य-परिणाम हैं। जो वैभव-संपन्न नहीं हैं, वे तप-जप में इसलिए लगे हैं ताकि भविष्य में वे भी ऐश का जीवन जी सकें। धर्म का पूरा उद्देश्य ही बदल गया। जो आत्म-केंद्रित था, वह वस्तु-केंद्रित हो गया और जो वस्तु-विमुख था, वह वह वस्तु-सम्मुख बन गया। इसी विचार के फलस्वरूप धर्म के नाम पर व्यापार और सौदेबाजी चलने लगी।

धर्म है आत्म-उज्ज्वलता का साधन। यह सोई हुई शक्तियों के पुनर्जागरण का उपादान है। भगवान महवीर ने कहा है, आत्मा ही नरक है, आत्मा में ही स्वर्ग है। जिसके भीतर नरक नहीं, उसके लिए बाहर कहीं भी नरक नहीं है। इसलिए उन्होंने भीतर पर जोर दिया जबकि हम बाहर पर जोर दे रहे हैं। बाहर के स्वर्ग और नरक की चिंता में उलझे हुए हैं। इसी चिंतन का दुष्परिणाम यह हुआ कि बाहर से जप-तप, पूजा-पाठ चल रहे हैं किंतु इधर छल-कपट- झूठ भी चल रहे हैं। शोषण और संग्रह भी चल रहा है, राग-द्वेष-घृणा भी चल रहे हैं। यानी धर्म करते हुए भी जीवन में कोई परिवर्तन नहीं है, कोई क्रांति नहीं है। इसलिए जीवन में शांति नहीं है। क्रांति केवल वर्तमान में ही घटित हो सकती है। वह भूत और भविष्य में कहीं संभव नहीं है। इसलिए हम अपने को वर्तमान से जोड़ें। वर्तमान को सजाएं-संवारें। हम खुद महसूस करेंगे कि हमारा जीवन आनंदमय हो रहा है, सब कुछ स्वर्ग जैसा लग रहा है। समाज और मनुष्यता के बारे में दृष्टि बदल रही है। बस, धर्म को जीवन से और वर्तमान से जोड़ कर देखें, आप प्रेम और क्षमा से भर जाएंगे।

विश्वआत्मा के साथ तादात्मय की सघन अनुभूति है मैत्री

❍ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

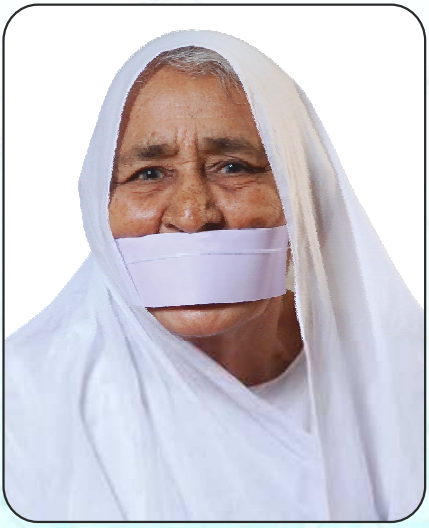

मनुष्य अपने जीवन को अतीत के हर क्षण से बेहतर जीना चाहता है और उसे खूबसूरती देना चाहता है। जीवन की खूबसूरती, बसों, ट्रेनों, स्कूलों, कॉलेजों आदि से नहीं बढ़ती उसके लिए अपेक्षित है, अन्तःसौंदर्य के ऐसे तत्व, जो बिखराव की चेतना को सृजन में बदल देते हैं। उन तत्वों में एक तत्व है मैत्री। मैत्रीभाव की चेतना जागृत होने पर जीवन का उद्देश्य बदल जाता है। जीवन का ढंग बदल जाता है और जीवन के अनुभव बदल जाते है।

मैत्री क्या?

अनेक परिभाषाओं में बांधा जा सकता है मैत्री को। पर इस समय हमारे दिमाग में एक नया विचार जन्मा है। इसके अनुसार व्यक्ति की अपनी प्रसन्नता ही मैत्री है। जो व्यक्ति निरंतर प्रसन्न रहना जानता है, वह अनायास ही सबका मित्र बन जाता है। जिस व्यक्ति का इस संसार से कोइ एक भी शत्रु होता है अथवा उसको कोई अपना दुश्मन समझता है, वह अनवरत प्रसन्न नहीं नहीं रह सकता। उसके मन में, चिन्तन में कभी न कभी विषण्णता अपनी प्रभुसत्ता स्थापित कर ही लेती है। इस दृष्टि से मैत्री और प्रसन्नता एक-दूसरे के पर्याय बोधक शब्द हैं।

मैत्री का दूसरा अर्थ है स्वास्थ्य। जो व्यक्ति सम्पूर्ण रुप से स्वस्थ होता है, वह सबका मित्र होता है। स्वास्थ्य की पूर्णता शरीर और मन दोनों की स्वस्थता में है। जो व्यक्ति मन से स्वस्थ नहीं होता, वह शरीर से भी स्वस्थ नहीं हो सकता। आज का मेडिकल साइंस भी मानता है कि बीमारी का पचास प्रतिशत मन में होता है। शरीर

तभी स्वस्थ हो सकता है, जब मन स्वस्थ हो। बहुत बार डॉक्टर के उपकरण मन की बीमारी को पकड़ नहीं पाते। ऐसी स्थिति में कुछ लोग शरीर और मन के सम्बंध को लेकर संदिग्ध हो जाते हैं। पर वास्तविकता यह है कि मानसिक विकृति उपकरणों से अभिव्यक्त हो या नहीं, उसके अभाव से शरीर अस्वस्थ नहीं हो सकता।

आयुर्वेद के आचार्यो ने स्वस्थ व्यक्ति को परिभाषित करते हुए लिखा-

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनः स्वस्थ इत्यभिधीयते ।।

जिसके शरीर में वात, पित्त और कफ समस्थिति में हों, अग्नि की मंदता या प्रबलता न हो शरीरगत धातु और मल विसर्जन की क्रिया सम हो, वह व्यक्ति स्वस्थ होता है। यह स्वास्थ्य की एक परिभाषा है, पर है अधूरी। शारीरिक स्वास्थ्य अधूरा स्वास्थ्य है। जिस व्यक्ति की आत्मा, इन्द्रिया और मन प्रसन्न है, वह व्यक्ति पूरी तरह से स्वस्थ होता है।

स्वास्थ्य की उक्त परिभाषा किसी शास्त्र या ग्रन्थ से ही नहीं, अनुभव की प्रयोगशाला में भी सिद्ध है। जब कभी किसी व्यक्ति का मन अप्रसत्न होता है अथवा किसी के प्रति शत्रुता के भाव से भरा होता है, शरीर में बीमारी के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। उस मनःस्थति में न तो खुल कर भूख लगती है और न गहरी नींद आती है। भूख और नींद ही क्या, शरीर का पूरा तंत्र गड़बड़ा जाता है। शारीरिक परीक्षण के दौरान पता चलता है कि उस अव्यवस्था का बीज शरीर में नहीं, मन के किसी अंधेरे कोने में छिपा पड़ा है।

स्वास्थ्य दीर्घ जीविता का लक्षण है। जो व्यक्ति शुरु से अन्त तक स्वस्थ रहते हैं, वे कभी अकाल मृत्यु को प्राप्त नहीं होते। अकाल मौत का अर्थ है, स्वास्थ्य में कमी। अकाल मौत का अर्थ है, प्रसन्नता में कमी। अकाल मौत का अर्थ है- मैत्रीभाव में कमी। दीर्घ जीवन का अमोघ नुस्खा है- सुस्वास्थ्य, प्रसन्नता और मित्रता।

मैत्री क्यों?

मैत्री का अर्थ बोध होने के बाद दूसरा प्रश्न है- मैत्री क्यों? यह भी कोई प्रश्न होता है कोई यह पूंछे कि आदमी स्वस्थ क्यों रहे? प्रसन्न क्यों रहे? क्या जबाब होगा, इस प्रश्न का। जिसको स्वस्थ और प्रसन्न रहना है, उसे मैत्री की शरण मे आना ही होगा।

मैत्री किसके साथ?

यदि यह कहा जाय कि अमुक-अमुक व्यक्ति के साथ मैत्री होनी चाहिए तो इसमे दुश्मनी साथ जुड़ जाती है। निर्द्वन्द्व मैत्री की आधारशिला है प्राणीमात्र। इस आधारशिला पर खडा रहने वाला व्यक्ति मित्ती में। सव्व भूएसु का आदर्श सामने रखकर बढ़ता है।

इसमें बड़े-छोटे, स्त्री-पुरुष, मित्र-शत्रु, अपने-पराये आदि की दीवारें ढह जाती हैं और अखण्ड चेतना का दरिया लहराने लगता है। वास्तव में मैत्री वही होती है, जो प्राणिमात्र के साथ हो। जो खण्ड-खण्ड विभक्त है, वह मैत्री नही, प्रेम होता है। प्रेम मोहमय भी हो सकता है और अमोहमय भी। मैत्री में मोह या अमोह की कोई पुट नहीं होती। वह विश्वात्मा के साथ तादात्मय की सघन अनुभूति है। जब तक मनुष्य सबके साथ मैत्री का अनुभव नही करेगा मैत्री की बात अधूरी रहेगी। जब तक विश्व के किसी भी प्राणी के थोड़ी भी किन्तु-परन्तु की भावना रहेगी, विराट मैत्री फलित नहीं होगी।

भगवान के बेटों को न सताओ

संत पाल की एक कहानी बड़ी मशहूर है। इस ईसाई संत ने ईसाई धर्म का खूब प्रचार किया था। वह पहले कोई महापंडित और ईसाइयत का घोर विरोधी था।

ईसा के शिष्य बिल्कुल सीधे-सादे और गरीब हुआ करते थे। कोई मछुआ था तो कोई बुनकर। मछुआ से ईसा ने कहा, 'कम एंड फॉलो मी, एंड आई विल मेक यू फिशर्ज ऑफ मैंन।' (तुम मेरे पीछे आओ, मैं तुम्हें मछुआ नहीं, मनुष्य-मार बनाऊंगा) वे अपना जाल छोड़कर ईसा के पीछे हो लिये।

ईसा के शिष्य एक के बाद एक मारे गये और सताये जाते थे। यह पाल ही, जो पहले 'साल' था, उन्हें बहुत सताता था। एक बार ईसा के अनुयायी कहीं जा रहे थे और पाल उनको सताने वाला था।

उसे पहली ही रात नींद नहीं आई और सपने में भगवान आकर बोले, 'साल! साल! व्हाई डू यू परसीक्यूट मी?' (साल-साल, तुम मुझे क्यों सताते हो?)

साल ने कहा, 'तुझे तो मैं नहीं सता रहा हूं। तुझे कब सताया है?'

तब ईसा बोले, 'तू मेरे लड़को को सताता है, तो मुझे ही सताता है।'

वह वाक्य उसने सुना और उसके दिल का परिवर्तन हो गया। वह साल से पाल होकर ईसा का ऐसा श्रेष्ठ शिष्य बना, जिसके दिल में भगवान आ विराजे।

हंस अकेला

{उपन्यास-शैली में आचार्यश्री रूपचन्द्र की जीवन-गाथा}

○ डॉ. विनीता गुप्ता

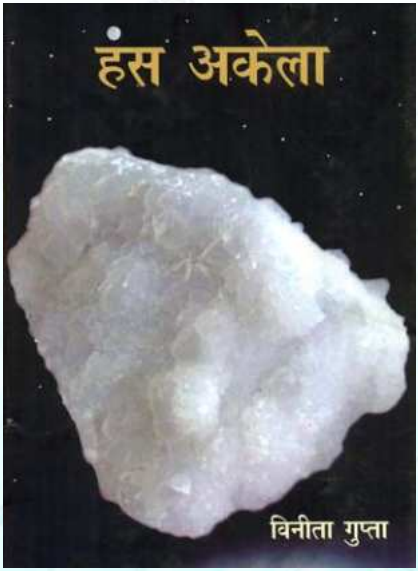

गतांक से आगे-

कुछ दिन के लिए मुनि जी बम्बई में मैरीन ड्राइव के पास अणुव्रत सभागार में ठहरे। वहां चौकीदार था हौसला प्रसाद। वह दिनभर काम करता और रात को सभागार के पीछे खोलीनुमा जगह में दुबक कर सो जाता था। मुनि जी बड़े हैरान थे कि इतना बड़ा हॉल छोड़ कर यह उमस भरी उस कोठरी में क्यों सोता है? मुनि जी तो रोज रात को हॉल में ही सोते थे। समुद्र किनारे बसा होने के कारण बम्बई के दिन और रात बहुत उमस भरे होते हैं। पसीना है कि सूखता ही नहीं। ऐसे में हौसला प्रसाद इस खोली-सी में घुस कर क्यों सोता है? अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए एक दिन उन्होंने हौसला प्रसाद से पूछ ही लिया- 'अरे, भई, हॉल में इतनी जगह है, तुम खोली में इतनी गर्मी में क्यों सोते हो?'

हौसला प्रसाद ने कहा, 'अगर आपको सच पता लग जाएगा तो आप भी वहां सोना छोड़ देगें। पहले मैं भी हॉल में सोता था, लेकिन एक दिन...'

'कुछ रुक कर फिर बताने लगा- मैं सो रहा था कि रात को किसी ने मेरी खटिया जोर-जोर से हिलायी और फिर खटिया समेत मुझे दूर पटक दिया।' हौसला प्रसाद के जबाब पर मुनि जी तनिक मुस्कराए। वह आगे कहता जा रहा था-

'मुनि जी अंधेरे में कोई सफेद-सफेद चोगा जैसा पहने हुए था। शक्ल नहीं दिखती थी। उसने खटिया समेत मुझे एक दिन पटका, मुझे समझ नहीं आया, दूसरे दिन भी जब ऐसा हुआ तो मैं घबरा गया और मैंने हॉल में सोना ही छोड़ दिया।' हौसला प्रसाद के माथे पर पसीना छलकने

लगा था, उस घटना को याद कर।

'यह तुम्हारा वहम है। और कुछ नहीं।' मुनि जी ने कहा। हौसला प्रसाद अपनी बात के तर्क में और बोलने लगा- 'मुनि जी यह वहम नहीं, सत्य है। ऐसा मेरे साथ ही नहीं, दो-एक और लोगों के साथ भी हो चुका है। इस हॉल में भूत या कोई आत्मा है, जो रात के अंधेरे में हमला करती है। एक बार एक हिन्दू संन्यासी यहां ठहरे थे। उनके साथ उनका एक सेवादार भी था। संन्यासी तो कमरे में सोये लेकिन सेवादार इसी हॉल में सोया। रात को वह मेरे पास आया कि अब वह वहां नहीं सोयेगा। मैंने अपनी आपबीती उसे पहले ही सुना दी थी। उसने बताया कि ठीक वैसे ही रात को किसी ने उसे थप्पड़ मारे और फिर खटिया समेत फेंक दिया। उसके बाद से वह हॉल में नहीं सोया', हौसला प्रसाद एक वाक्य में सब कह गया।

मुनि जी अनुभव करना चाहते थे कि क्या ऐसा कुछ होता भी है या नहीं। वैसे वे जानते थे कि सत्य के धरातल पर ऐसा कुछ घटित नहीं होता। सिर्फ कमजोर मन वाले व्यक्ति ही अपनी मानसिक कमजोरी के कारण ऐसा महसूस करते हैं। फिर भी मुनि जी यह जानने के लिए हॉल में ही सोये कि क्या सत्य के धरातल पर भी ऐसा कुछ घटित होता है? और अगर कुछ होता है, तो वे उस श्वेताकार मानव से पूछेंगे कि वह ऐसा क्यों करता है?'

मुनि जी उस रात बड़ी सजग नींद सोये, सुबह तक ऐसा कुछ नहीं हुआ। न खटिया पलटी, न थप्पड़ पड़े। सर्वाइकल की पीड़ा ने मुनि जी को कई दिनों से परेशान कर रखा था। इस कारण उन्हें रात को नींद नहीं आती थी। यह नींद न आना उस प्रसंग की सच्चाई की शोध में सहायक हो सकता है। मुनि जी ने दर्द को खूब खेलने दिया, कोई उपचार नहीं किया। एक दिन, दो दिन, तीन दिन ऐसे कर सात दिन वह रात-रात भर उस श्वेताकार के दर्शन की कोशिश करते रहे, लेकिन कोई नहीं आया। वहां से चलते समय उन्होंने हौसला प्रसाद से कहा- 'अरे, सुन हौसला प्रसाद, तू हौसला क्यों खोता है? यह सब तेरे मन की कमजोरी है, मन का वहम है। देख मैं सात दिन वहां सोया लेकिन कुछ नहीं हुआ। कमजोर पर तो सभी हावी हो जाते हैं। अपने आप को मजबूत बना हौसला प्रसाद।'

x x x

सन् उन्नीस सौ चौहत्तर भगवान महावीर की पच्चीसवीं निर्वाण-शताब्दी का वर्ष। इस वर्ष मुनि जी की पदयात्रा का अगला लक्ष्य था भगवान महावीर की तपोभूमि और निर्वाण भूमि राजगृही-पावापुरी। उसी लक्ष्य तक पहुँचने के लिए वे

उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ पहुँचे पदयात्रा करते हुए। एक दिन वहां उनके पास एक जिज्ञासु आया। उनके मुख पर गहरी आध्यात्मिकता के भाव झलकते थे। एक दिन वह मुनि जी से बोले- 'मैं अकेले में आपसे कुछ बात करना चाहता हूं।' मुनि जी के पास अक्सर कोई न कोई भक्त या जिज्ञासु बैठा रहता था। मुनि जी ने उससे कहा- 'हां, कहिये अभी तो कोई नहीं है। क्या बात है?'

बात शुरू करते हुए उन्होंने कहा- 'पिछले कुछ वर्षों से जप-योग साधना चल रही है। किन्तु अभी कुछ समय से मैं बड़े असमंजस में हूं।'

'असमंजस का क्या कारण है'- मुनि जी ने पूछा। वह बोले- 'कुछ वर्ष पूर्व एक स्वामी जी मेरे घर ठहरे थे। मैंने उनसे ध्यान-विधि के बारे में जिज्ञासा प्रकट की। उन्होंने गुरू-मंत्र प्रदान करते हुए कहा- 'दोनों आँखों के मध्य भृकुटी के स्थान पर गुरू का चित्र स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आ जाए, तो तुम्हारा मंत्र सिद्ध हो जाएगा।'

थोड़ा रुककर वह फिर बोलने लगे- 'मेरा जप नियमित रूप से लम्बे समय तक चलता रहा। अब गुरू का चित्र भी ललाट के मध्य भाग पर थोड़ा-थोड़ा उभरने लगा था। तभी एक और स्वामी जी का घर पर आना हुआ। उन्होंने मेरी ध्यान-विधि में संशोधन करते हुए बताया कि ललाट के मध्य चित्र गुरू का नहीं, भगवान कृष्ण का उभरना चाहिए। गुरू देहधारी हैं। अभी वे स्वयं साधना अवस्था में हैं। वे राग-द्वेष के बन्धनों से सर्वथा मुक्त नहीं हैं। भगवान विदेह हैं, वीतराग हैं। इसलिए ध्यान भगवान का ही होना चाहिए। चित्र भगवान का उभरना चाहिए। अतः तुम्हें अपने भृकुटि-स्थान पर भगवान कृष्ण का ही ध्यान करना चाहिए। भगवान कृष्ण का चित्र ललाट के मध्य उभर कर आ जाएगा, तुम्हारा मंत्र सिद्ध हो जाएगा।'

'स्वामी जी का कथन मुझे ठीक लगा। तर्क-संगत भी था। मैंने गुरू के चित्र के स्थान पर भगवान कृष्ण के चित्र का ध्यान शुरू कर दिया। थोड़े ही अभ्यास के बाद भगवान का चित्र उभरने लगा। अब स्थिति यह है कि मैं जब भी ध्यान करने बैठता हूं तो कभी गुरूदेव का चित्र उभरता है और कभी भगवान का। मेरा असमंजस यह है कि ध्यान के समय चित्र किनका सामने आना चाहिए, गुरूदेव का या भगवान का? गुरूदेव ने मुझे मंत्र दिया है, इस दृष्टि से जब सोचता हूं, तो लगता है चित्र गुरूदेव का ही सामने आना चाहिए। किन्तु भगवान, शुद्ध-बुद्ध, ज्योतिर्मय और चिन्मय हैं। इस दृष्टि से ध्यान तो भगवान का होना चाहिए। अब आप ही बताएं, किस चित्र का उभर

कर आना श्रेष्ठ होगा। भगवान कृष्ण का चित्र या पूज्य गुरूदेव का।'

उन भगत जी के भोले-भाले प्रश्न पर मुनि जी को मन ही मन हँसी आने लगी। सहज-सरल समर्पित चित्त का शोषण जिस प्रकार से किया जा रहा है, यह कष्टकारी था। मुनि जी के मन में किसी प्रकार का परम्परागत आग्रह होता, तो वे कह सकते थे, हटाओ ध्यान कृष्ण से अथवा इन भगवां धारी स्वामियों से। इनसे उम्र भर भी कुछ नहीं होने वाला। इनके स्थान पर तुम ध्यान लगाओ महावीर पर, पार्श्वनाथ पर, अन्य जैन तीर्थंकरों पर, श्वेताम्बर जैन मुनियों पर, तभी तुम्हारा ध्यान सफल होगा। लेकिन मुनि जी इस संकुचित मानसिकता से ऊपर उठ चुके थे। मुनि जी ने उनसे कहा- 'आप इनकी चिंता छोड़ ही दीजिए कि चित्र गुरूदेव का उभर रहा है, अथवा भगवान का। प्रयत्न भी छोड़ दें कि यह चित्र या वह चित्र आज्ञा-चक्र पर उभरना चाहिए। जो भी चित्र उभरता है, गुरूदेव का या भगवान का, उसके प्रति द्रष्टा बन जाएं। केवल देखते रहें उस चित्र को, किसी भी उपेक्षा या अपेक्षा के बिना।'

उन्होंने प्रश्न किया- 'किन्तु किस चित्र के उभरने से मंत्र सिद्ध होगा?'

मुनि जी उनकी व्यग्रता को देख रहे थे। बोले- 'जब सारे चित्र विलीन हो जाएंगे, कोई भी चित्र दिखाई नहीं देगा। जब तक हमारा मन चित्रों में रमा रहेगा, हम वास्तविकता को कैसे पा सकते हैं? रूप-आकार के पार गए बिना मंत्र सिद्ध नहीं हो सकता।'

उनके चेहरे पर उभरी रेखाएं स्पष्ट बता रही थीं कि उनके मन की उलझन और बढ़ गई है। मुनि जी ने और विस्तार से समझाते हुए कहा- 'हम मन को एकाग्र करने के लिए किसी शब्द, मंत्र अथवा रूप-आकार का सहारा लेते हैं। शब्द और रूप मन की खुराक है। इनके बिना मन जिंदा नहीं रह सकता। जैसे पानी के बिना मछली का जिन्दा रहना असंभव है, वैसे नाम और रूप, मन के अस्तित्व के लिए अनिवार्य हैं। नाम और रूप की दुनिया में यह मन भटकता रहता है। परमात्मा अनाम है, अरूप है। अब नाम और रूप में भटकने वाला मन अनाम और अरूप का अनुभव कैसे करेगा?'

'इसके लिए गुरू साधक को कोई शब्द, कोई मंत्र, किसी एक रूप या आकार का आलम्बन देते हैं, ताकि नाम और रूप के जगत में चारों ओर भटकता हुआ मन किसी एक नाम या रूप पर स्थिर हो जाए। वह नाम या रूप ऐसा हो जिस पर हमारी गहरी आस्था हो, जिसका अपना जीवन समाधि-अनुभव लिए हो, तभी हमारा मन उस नाम और रूप पर टिक सकेगा। किन्तु ये नाम और रूप हमारा लक्ष्य नहीं हैं। हमें

उन पर ही ठहर नहीं जाना है। अनेक से हटाकर मन को एक पर लगाना है, फिर एक से हटाकर अनाम में छलांग लगानी है। शब्द आखिर शब्द है, फिर चाहे वह गुरू का हो, भगवान का हो अथवा किसी देवता विशेष से जुड़ा कोई मंत्र हो। रूप आखिर रूप है, फिर चाहे वह गुरू का हो अथवा भगवान का। शब्द कभी अशब्द का अनुभव तो दे नहीं सकता और रूप कभी अरूप का।

'ध्यान का उद्देश्य है अशब्द, अनाम, अरूप चेतना का साक्षात्कार। जब हम जप या ध्यान करते हैं, तब ध्येय, ध्याता और ध्यान तीनों रहते हैं। साधना के प्रारंभ में ये तीनों रहते हैं। साधक ज्यों-ज्यों गहराई में उतरता है, यह तीन का भेद समाप्त हो जाता है। फिर एक समय आता है, जब यह भेद पूर्णतः विलीन हो जाता है। वही क्षण आत्मानुभूति का क्षण है। उसी आत्म-साक्षात्कार के क्षण में द्वैत का कोई स्थान नहीं है।'

'जिस क्षण न आप होंगे, न मंत्र होगा, न किसी का कोई रूप या चित्र होगा, उस दिन आपका जप और ध्यान सिद्ध हो जाएगा। उससे पहले कोई भी चित्र उभरता है, उभरने दीजिए। कोई चित्र नहीं उभरता तो उसके लिए प्रयत्न मत कीजिए। महत्त्व चित्र का नहीं, द्रष्टा भाव का है, उस लयात्मक स्थिति का है।'

भगत के चेहरे पर सन्तोष की झलक दिखाई दे रही थी। संतुष्ट होकर वह जाने की तैयारी करने लगा। मुनि जी ने मंगल पाठ सुना कर उसे कृत-कृत्य किया।

x x x

-क्रमशः

ज्ञान

• वही वास्तव में पंडित है जो जीवन के रहस्यों को जानकर आचरण में ला सके।

-भगवान महावीर

• अपने अज्ञान का आभास होना ही ज्ञान की तरफ बड़ा कदम है।

-डिजरायली

• ज्ञान ही काफी नहीं है, इस पर अमल भी करना होता है। इच्छा ही काफी नहीं है, इस पर काम भी करना होता है।

-गेटे

• विकसित हो रहा ज्ञान ही अच्छे लोगों के विचार है।

-मिल्टन

ऊर्जा का स्रोत है स्वस्तिक

स्वस्तिक शब्द 'सु+अस्ति+क' से बनता है सु- अच्छा, अस्ति- है- अस्तित्व, क- कर्ता अर्थात अच्छा या मंगल करने वाला। अमरकोश में इसका अर्थ 'मंगलाशीष' है अर्थात् 'सर्वतोऋद्ध'- सभी दिशाओं में सबका कल्याण। सूक्ति कहती है स्वस्तिक क्षेम कायति इति स्वस्तिकः अर्थात कुशल क्षेम कल्याण का प्रतीक स्वस्तिक है। शुभंकर स्वस्तिक भवन के प्रमुख स्वस्तिक द्वार दोनों ओर बनाया जाता है। घर को अनिष्ट से बचाने और लक्ष्मी की वृद्धि के लिए शुभंकर चिन्ह स्वस्तिक का प्रयोग भारत में प्राचीन काल से होता चला आ रहा है। ग्रामवासी गोबर, हल्दी, पीली अथवा लाल मिट्टी से स्वस्तिक बनाते हैं। शहरों में घी और सिन्दूरी से बनाते हैं। पारम्परिक व्यापारियों के बही खातों में स्वस्तिक पूजा के पश्चात ही जमा-खर्च लिखा जाता है। वर्तमान में ग्लेजड टाइल्स भी अनेक स्वस्तिकों के रंगीन चित्रों के साथ मिलती है। वास्तव में स्वास्तिक सृष्टि चक्र के गूढ़ रहस्य का प्रतीक है और पृथ्वी की ऊर्जा की दिशा भ्रमण का संकेत है। इसमें अलौकिक और दिव्य शक्तियों का होना सर्वस्वीकृत है

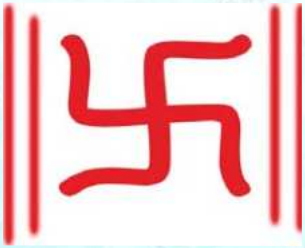

परस्पर मध्य बिन्दु से एक-दूसरे को काटने वाली दो सरल रेखाएं चारों दिशाओं को व्यक्त करती हैं और उनका केंद्र नाभ्यंतर दर्शाता है। सृष्टि चक्र सतत गतिशील है और गति की दिशा बाएं से दाएं पूर्व से दक्षिण फिर पश्चिम तथा उत्तर से चलकर पुनः पूर्व में वृत्त पूरा होता है इसे क्लोकवाइज कहते हैं। प्रत्येक भुजा के सिरे समकोण बनाने वाली रेखाएं अनन्त हैं। जिनका कोई स्पर्श या संधि बिन्दु नहीं है। यही अनन्त ब्रह्माण्ड का द्योतक है।

मध्य बिन्दु के चारों ओर चलने वाली रेखाएं मध्य स्थिर बिन्दु से उत्पन्न ब्रह्माण्ड की तथ्य कथा कहती है। वास्तु में भवन के मध्य बिन्दु को ही ब्रह्मम् स्थान कहा जाता है। उत्तरायण से दक्षिणायन के अंतरग्रहीय और सौर मण्डल के संतुलन चुम्बकीय आकर्षण शक्ति का प्रतीक है स्वस्तिक। ऊर्जा-चक्र भी इसी दिशा में गतिशील होता है।

स्वस्तिक का दर्शन अपूर्व मानसिक शांति, अध्यात्मक व सद् विचारों का प्रेरक है। जिस तरह ऊँ (ओम्) में प्राकृतिक अनन्त ऊर्जा विद्यमान है जो हमें उसके

उच्चारण से प्राप्त होती है वहीं ऊर्जा स्वस्तिक के दर्शन से प्राप्त होती है। दक्षिणावर्ती घूमने वाली भुजाएं इसे धरती के प्राण और जीवन दाता सूर्य का प्रतीक बनाती है। वास्तव में स्वस्तिक ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का अप्रतिम स्रोत है।

दक्षिणावर्त (क्लोकवाइज) स्वस्तिक शुभ है जबकि वामावर्त (एन्टिक्लोकवाइज) अशुभ। समकोण में मुड़ने वाली रेखाएं के अग्रभाग चारों कोण दिशाओं का संकेत करते हैं।

स्वस्तिक विष्णु, सूर्य, सृष्टिचक्र, सम्पूर्ण, ब्रह्माण्ड, गणेश व सुदर्शन चक्र का प्रतीक चिन्ह है। अर्थात श्रेष्ठ+शुभ+शक्ति का समन्वय। पावसी चातुर्मास में अष्टदल कमल से स्वस्तिक बनाकर नित्यपूजा भी पदम पुराण में निर्देशित है। सिन्धुघाटी की सभ्यता की खुदाई में मिले पात्रों में स्वस्तिक चिन्ह पाया गया है। जैन परम्परा में अष्ट मंगल द्रव्यों में स्वस्तिक का स्थान सर्वोपरि है। बौद्धमत में भी स्वस्तिक को मंगल चिन्ह माना गया है। इस प्रकार प्राचीनता व्यापकता और महत्व स्वयं सिद्ध है।

अतः सुख, शांति और सम्पन्नता हेतु अपने भवन के प्रवेश द्वार पर स्वस्तिक अवश्य बनायें।

-प्रस्तुति : सोहनवीर सिंह

जैसी दृष्टि

रामदास रामायण लिखते जाते और शिष्यों को सुनाते जाते थे। हनुमान भी उसे गुप्त रुप से सुनने के लिए आकर बैठते थे। समर्थ रामदास ने लिखा, 'हनुमान अशोक वन में गये, वहाँ उन्होंने सफेद फूल देखे।'

यह सुनते ही हनुमान झट से प्रकट हो गये और बोले, 'मैंने सफेद फूल नहीं देखे थे। तुमने गलत लिखा है, उसे सुधार दो।'

समर्थ ने कहा, मैंने ठीक ही लिखा है। तुमने सफेद फूल ही देखे थे।

हनुमान ने कहा, 'कैसी बात करते हो! मैं स्वयं वहां गया और मैं ही झूठा।'

अंत में झगड़ा रामचंद्रजी के पास पहुंचा। उन्होंने कहा, 'फूल तो सफेद ही थे, परंतु हनुमान की आंखें क्रोध से लाल हो रही थीं, इसलिए वे उन्हें लाल दिखाई दिये।'

इस मधुर कथा का आशय यही है कि संसार की ओर देखने की जैसी हमारी दृष्टि होगी, संसार हमें वैसा ही दिखाई देगा।

-प्रस्तुति : सुभम् जैन

जन-वाणी का साहित्य है ''केवल तुम नहीं हो''

○ डॉ. अरुण कुमार पाण्डेय

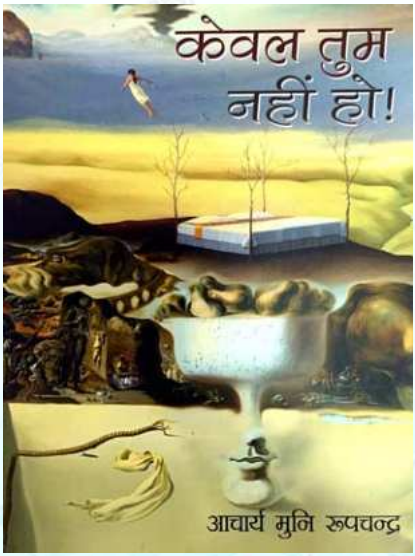

आचार्यश्री के पुस्तक की समीक्षा करना मेरे लिए..... **हरि अनंत, हरि रूप अनंता// ''कैसे कोई ध्यावै''** जैसी स्थिति है। इसीलिए आस्थावान पाठक के रूप में मैं इस पुस्तक से जो कुछ प्राप्त कर सका हूँ, उसे ही कहने का प्रयास कर रहा हूँ। सामान्यतः कवियों का आह्वान होता है कि ''बात बहुत आवश्यक'' है ध्यान से सुनियेगा। मैं आश्वस्त कर सकता हूँ कि ''केवल तुम नहीं हो'' पढ़ने के लिए आपको ऐसे किसी आह्वान की जरूरत नहीं होगी। आप पुस्तक का एक पन्ना पलट लीजिये फिर आप पूरा पढ़े बिना कहीं जा नहीं सकेंगे। संग्रह की हर पंक्ति आपको अपनी अभिव्यक्ति लगेगी। प्रयुक्त उपमान आस-पास तैरते नजर आयेंगे। इस काव्य संग्रह में संकलित पदों की भाषा व अभिव्यक्ति प्रत्येक स्तर के मानव मस्तिष्क के लिए सुग्राह्य है। आपको शब्द-ब्रह्म का साक्षात् करने के लिए किसी शब्दकोष या व्याख्याकार के पास नहीं जाना होगा।

आचार्यश्री मेरी समझ में तो दार्शनिक-संत हैं जिनके पास गूढ़तम ज्ञान का रहस्य है, यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। वे कवि के रूप में ''कबीर की सहजयोक्ति परम्परा को सजीवता'' प्रदान करते हैं यह उनकी रचनाओं का पाठक ही समझ सकता है। उनके कहे पदों की खूबसूरती मात्र यह नहीं है कि विद्वत वर्ग उसकी लम्बी-लम्बी व्याख्या कर सकता है, बल्कि सामान्य समझ का आदमी भी उससे कम से एक सूत्र की निष्पति तो प्राप्त कर ही लेता है। जिससे वह एक विराट जनसमुदाय के कवि बन जाते हैं।

इन सहज व सामान्य अभिव्यक्तियों में जिज्ञासा, संकल्प, संवेदना, तर्क, चिन्तन, चेतना और साधना वह सब है, जो बिरले

कवियों को प्राप्त होता है। वह श्रेष्ठतम कवि इसलिए भी बन जाते हैं क्योंकि अपनी रचनाओं में वे दार्शनिक के रूप में समस्या की पहचान करते हैं फिर संत के रूप में मार्गदर्शन। धर्मसत्ता अक्सर मानव समाज को संचेतना के बहाने, नैतिकता के बहाने, परम्परा विछिन्न होने पर आने वाली विपत्ति के बहाने ''कटीले तारों की बाड़े'' में कैद करने की कोशिश करती है, आचार्यश्री उसी ''विधर्मी'' धर्म सत्ता को सचेत करते हुए लिखते हैं कि धर्म के नाम पर भोली जनता को गुमराह करने वालों यदि इन्सान ने बागवत कर दी तो पैगम्बर का क्या होगा। यह कवि की ओर से तो अपेक्षित है, लेकिन ''संत कवि'' के द्वारा लिखा यह मुक्तक कई धारणाओं को तोड़ता है। संग्रह मुझे प्रिय इसलिए भी है क्योंकि मेरी प्रिय कविता ''झरोखे में बैठा एक उदास कबूतर'' भी इस संग्रह में शामिल है। जो मैंने आचार्यश्री से विनती करके कई बार सुनी है। मैं गंगा प्रसाद जी की उस टिप्पणी से सहमत हूँ कि आचार्यश्री की कवितायें जन-वाणी का साहित्य हैं जो अनेक विषयों पर एक सशक्त हस्तक्षेप दिखाई देता है। उसे साहित्य के उत्कर्ष से जोड़कर देखने की जरुरत नहीं है।

चुटकुले

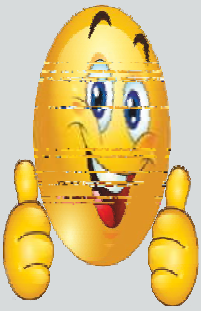

(1) बैंक मैनेजर- कैश खत्म हो गया है कल आना।
संतोष- लेकिन मुझे मेरे पैसे अभी चाहिये
मैनेजर- देखिये आप गुस्सा मत करिये, शांति से बात कीजिये
संतोष- ठीक है बुलाओ शांति को, आज उसी से बात करूंगा!

(2) पप्पू उदास बैठा था...
गप्पू- क्या हुआ, उदास क्यों बैठा है?
पप्पू- क्या बताऊं यार, किसी ने कहा कि पेड़ से हमें 'शीतल छाया' मिलती है...
मैं यहां पेड़ के नीचे तीन दिन से बैठा हूं, लेकिन न तो शीतल आयी और न छाया...!!

(3) चिंटू- भाई तू स्कूल क्यों नहीं जाता है?
पिंटू- अरे जाता तो हूं, लेकिन टीचर मुझे मार के बाहर निकाल देते हैं...
चिंटू- क्यों भाई? कौन से स्कूल जाता है?
पिंटू- गर्ल्स स्कूल...!!!

-प्रस्तुति : सुभम् जैन

चंद्रमा देवता का दूत

दोपहर का वक्त था, जंगल में तीन खरगोश अपनी-अपनी खोह के पास बैठकर भोजन करते हुए आपस में बातें कर रहे थे। तभी कानों में तेज स्वर में आवाजें आने लगी। तीनों चुप हो गये। मीकू खरगोश बोला, 'चुप... चुप...हाथी आ रहे हैं।

'लगता है इधर ही आ रहे हैं।' रिंकू खरगोश ने भी कहा। इतने में चीनू खरगोश जोर से चिल्लाया, 'भागो, यहां से चलो।' उसी समय हाथियों का एक झुंड तेज स्वर में चिंघाड़ता हुआ उधर से गुजरा। सभी हाथी धूल उड़ाते हुए चले गये। अगले दिन सारे खरगोशों ने मिलकर जंगल में एक सभा बुलायी।

'इन हाथियों की भगदड़ में हमारे चार साथी मारे गये हैं। वे सभी उन हाथियों के पैरों के नीचे कुचलकर मरे हैं।' मीकू खरगोश ने कहा।

चीनू बोला, 'आज का दिन हमारे लिए बहुत मनहूस था।

रिंकू खरगोश बीच में ही बोल पड़ा, 'ये हाथी इस तरह क्यों करते हैं?

चीनू ने जवाब दिया, वो सभी तालाब में जल्दी पहुंचने के लिए रेस लगा रहे थे। उन्हें वहां जाकर नहाना जो था।

'हाथियों का यह झुंड पास के जंगल से यहां आ गया है और वे अब तो रोज ही इस तालाब में नहाने के लिए आया करेंगे और दूसरे जानवरों को नुकसान पहुंचाया करेंगे।' मीकू बोला।

'अब हमारा यहां रहना मुश्किल है, समझदारी इसी में हैं कि हम यहां से चले जाएं।' रिंकू खरगोश ने सोचते हुए कहा। तभी दूर खड़ा शैंकी खरगोश जो उनकी बातें सुन रहा था उनके पास आया और बोला- 'हम यहाँ हमेशा रहते आये हैं। अपने पुरखों की जमीन छोड़कर भला हम क्यों जाएंगे? जाना तो उन्हें चाहिए।'

'चलो हम उन्हें मार-मारकर भगा देंगे। शैंकी ने जोशीले स्वर में कहा।

रिंकू गहन विचार की मुद्रा में था बोला- 'कहना आसान है, करना बहुत मुश्किल है।

'वो कितने विशालाकार हैं और हम उनकी तुलना में कितने कमजोर और छोटे हैं।' मीकू ने कहा।

चीनू बोला, 'उन्हें यहां से भगाने की हमें कोई न कोई तो तरकीब सोचनी ही पड़ेगी। इतने सारे हाथियों को भगाने के लिए हमें बल से नहीं बुद्धि से काम लेना होगा।'

'मेरे दिमाग में एक आइडिया है' मैं जाता हूं और जाकर उन हाथियों से बात करता हूं।' रिंकू ने कहा।

चीनू ने हैरान होते हुए कहा, 'अकेले जाओगे क्या? अगर वे बिगड़ गये तो... ?'

'बात करने से क्या होगा? मुझे नहीं लगता कि उन्हें हमारी बात समझ में आयेगी।' शैंकी ने बात को बीच में काटते हुए कहा।

मीकू ने सलाह दी, 'इसे कोशिश करके देखने दो। क्योंकि ये हममें सबसे ज्यादा बुद्धिमान है। हमें इसकी समझ पर पूरा भरोसा है।'

रिंकू धीरे-धीरे चलता हुआ पहाड़ की चोटी के सबसे ऊपरी सिरे पर जाकर बैक गया। तभी उसे दूर से हाथियों का झुंड आता हुआ दिखायी दिया। उनके करीब आने पर वह जोर से चिल्लाया, सुनो, सुनो मेरी बात सुनो हाथियों के झुंड में से एक हाथी बोला, लगता है कोई हमसे कोई कुछ कह रहा है। दूसरा हाथी तुरंत आगे निकल आया और बोला, 'कौन हो तुम?'

'मैं चंद्रमा देवता का दूत हूं।' तेज स्वर में बोला।

'अच्छा' तीसरे हाथी ने कहा।

'आज जब तुम तालाब में नहाने के लिए एक-दूसरे के साथ कंपीटीशन कर रहे थे तो तुम्हारे पैरों के नीचे दबकर तीन खरगोश मर गये थे।'

'पहले हाथी ने हैरान होते हुए कहा, 'अच्छा हमें तो पता ही नहीं चला।'

रिंकू ने कहा- 'क्या तुम्हें पता है, हम चंद्रमा देवता के सबसे प्रिय जानवर हैं। हम उनके प्रतीक चिन्ह के वाहन हैं। वो तुम्हारे इस कृत्य से बहुत क्रोधित हैं। जाओ, उस तालाब के पास जाकर खड़े होकर सुनो, चंद्रमा देवता तुमसे कुछ कहना चाहते हैं।'

तभी सारे हाथी जल्दी-जल्दी चलकर उस तालाब के पास आ गये और उन्होंने रिंकू से पूछा कि चंद्रमा देवता कहां पर हैं? रिंकू ने जवाब दिया- चंद्रमा देवता तो पानी के भीतर रहते हैं यदि वे पानी से बाहर आ गये तो उनके प्रकाश से सब कुछ जलकर खाक हो जायेगा।'

'अच्छा' एक हाथी ने हैरानी से कहा।'

रिंकू ने जवाब दिया- 'चंद्रमा देवता क्रोध के कारण बहुत बेचैन है, अच्छा होगा अगर तुम उन्हें शांत ही रहने दो। क्योंकि अगर तुमने उन्हें उकसाया तो वह पानी से कूदकर बाहर आ जाएंगे।

'कहां है चंद्रमा' पहले हाथी ने दोबारा सवाल पूछा।

चुपचाप खड़े होकर पानी के बीच में

देखो, तुम्हें चंद्रमा देवता दिखायी देंगे। रिंकू बोला। उसकी बात सुनकर सारे हाथी किनारे पर खड़े होकर चुपचाप पानी में देख रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि पानी के ऊपर चंद्रमा दिख रहा था। पहला हाथी बोला, 'वो रहा चंद्रमा देवता।' दूसरे ने कहा देखो, अब वहां चला गया। तीसरा बोला, अरे मुझे तो लगता है अब वो बाहर आने वाले हैं पर देखो कैसे वह धीरे-धीरे चल रहे हैं।

रिंकू खरगोश अपनी चतुराई पर मन ही मन खुश था और वह अपने आप से बोला, 'इन मूर्खों को पता ही नहीं है कि पानी के ऊपर चंद्रमा नहीं बल्कि उनकी परछायी हैं और जब यह पानी के बीच में खड़े होकर देखते हैं तो चंद्रमा की परछायी भी इन्हें हिलती नजर आ रही है। तभी पीछे से तेज स्वर में किसी की आवाज आयी।

'इस जगह को छोड़कर हमेशा के लिए यहां से चले जाओ, इसके पहले कि मैं यहां से बाहर आ जाऊं।'

उन हाथियों में से एक हाथी बोला, 'अरे ये तो चंद्रमा देवता की आवाज है। वह अपनी आवाज में नर्मी लाते हुए बोला हां, हां जैसी आपकी आज्ञा, चंद्रमा देवता। सभी हाथी पलटकर तेज गति से उल्टी दिशा में चलने लगे। रिंकू अपनी होशियारी पर मंद-मंद मुस्कुरा रहा था। उसने कभी इतने सारे हाथियों को इतना डरा हुआ नहीं देखा था।

'बाहर आ जाओ।' रिंकू तेज स्वर में चिल्लाया।

'कैसी परफोंमेंस थी मेरी। चीनू गर्वित होते हुए बोला।

'बहुत धमाकेदार।'

'तुम्हारे स्वर से ऐसा लग रहा था मानो चंद्रमा देवता धरती पर उतर आये हों।

दोनो खिलखिलाकर तेज स्वर में हंसने लगे।

...और इस तरह जंगल में हाथियों का आतंक खत्म हो गया। सुबह देखा तो सभी हाथी जंगल छोड़कर भाग गये थे। बुद्धिमानी से छोटे से खरगोश ने शक्तिशाली हाथियों को पराजित कर दिया था।

-प्रस्तुति : साध्वी वसुमति

जुकाम

बनफसा, मुलेठी, खत्मी, लिसोड़े,
मंगाकर बाजार से थोड़े-थोड़े।
पकाकर पीजै सुबह और शाम,
कहाँ की सर्दी, कहाँ का जुकाम।।

हनुमान जी को सिंदूर क्यों चढ़ाया जाता है?

हिंदू शास्त्रों में इस प्रसंग की जानकारी दी गई है कि जब लंकापति रावण को मारकर भगवान राम जी माता सीता जी को लेकर अयोध्या आए थे। तब हनुमान जी ने भी भगवान राम और माता सीता के साथ अयोध्या आने की जिद की थी। भगवान राम ने अपने प्रिय भक्त हनुमान जी को बहुत समझाया पर वह नहीं माने। क्योंकि बजरंगबली अपने जीवन को प्रभु श्रीराम की सेवा करने में बिताना चाहते थे। श्री हनुमान जी दिन रात यही प्रयास करते रहते थे। कि कैसे अपने आराध्य प्रभु श्रीराम को खुश रखा जाए।

एक बार बजरंगबली ने माता सीता को मांग में सिंदूर भरते हुए देखा। तो यह माता सीता से इसका कारण पूछा की माता आप अपने मांग में सिंदूर क्यों लगा रही हैं? माता सीता ने हनुमान जी को उत्तर दिया कि वह प्रभु श्रीराम को प्रसन्न करने के लिए सिंदूर लगाती हैं। श्री हनुमान जी को अपने आराध्य प्रभु श्रीराम को प्रसन्न करने का यह युक्ति बहुत ही अच्छी लगी। उन्होंने सिंदूर का एक बड़ा बक्सा लिया और स्वयं के ऊपर उसे उड़ेल दिया। और अपने आराध्य भगवान श्री राम के सामने पहुंच गए।

जब भगवान श्रीराम ने अपने प्रिय भक्त हनुमान को इस स्थिति में देखा तो यह आश्चर्य में पड़ गए। और उन्होंने हनुमान से इसका कारण पूछा, तो हनुमान जी ने भगवान श्रीराम से कहा कि प्रभु मैंने आपकी प्रसन्नता के लिए ऐसा किया है। सिंदूर लगाने के कारण ही आप माता सीता से बहुत प्रसन्न रहते हैं। अब आप भी मुझ पर उतना ही प्रसन्न रहिएगा। भगवान श्रीराम को अपने भोले भाले भक्त हनुमान जी की युक्ति पर बहुत हंसी आई। और भगवान श्री राम के हृदय में अपने भक्त हनुमान जी जगह और गहरी हो गई। हमारे धर्म और पुराण बतलाते हैं, की उसी दिन से हनुमान जी को सिंदूर चढ़ाया जाता है।

बीमारियों से निजात दिलाता है जामुन

जामुन भारत में काफी लोकप्रिय फल माना जाता है। जामुन को ब्लैकबेरी के नाम से भी बुलाया जाता है। जामुन एक ऐसा फल है जिसे मधुमेह रोगी बिना किसी परेशानी के खा सकते हैं। जामुन की गुठली ब्लड शुगर की अधिकता को नियंत्रित करने की अद्‌भुत शक्ती रखती है। जामुन के बहुत सारे स्वास्थ्य लाभ हैं। औसतन 100 ग्राम जामुन में 62 किलो कैलौरी ऊर्जा, 1.2 मिली ग्राम लोहा, 15 मिली ग्राम कैल्शियम, 15 मिली ग्राम फास्फोरस 18 मिलीग्राम विटामिन सी, 48 माइक्रोग्राम कैरोटीन, 55 मिलीग्राम पोटेशियम, 35 मिली ग्राम मैग्नीशियम और 25 मिलीग्राम सोडियम पाया जाता है। जामुन में विटामिन बी और आयरन पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। एनीमिया (खून की कमी) के मर्ज को दूर करने में और रक्त में हीमोग्लोबिन बढ़ाने के लिए जामुन का सेवन लाभप्रद है। यही नहीं जामुन सेवन से त्वचा का रंग निखरता है। जिन लोगों को 'सफेद दाग' का मर्ज है, उन्हे जामुन खाना चाहिए। आयुर्वेद के अनुसार मधुमेह टाइप-2 को नियंत्रित करने में भी जामुन सहायक है। जामुन बिल्कुल भी मंहगा फल नहीं है और इसका पेड़ आसानी से सड़कों किनारे मिल जाता है। आपको भी अपने घर में जामुन का फल लगाना चाहिये और इसके गुणों का फायदा उठाना चाहिये। जामुन मधुमेह, कैंसर, पथरी, मुंह के छाले, दस्त तथा खूनी दस्त आदि रोगों से मुक्ती मिलती है। तो अगर आपको रोग मुक्त रहना है तो जामुन को नमक मिला कर खूब खाइये। आइये जानते हैं जामुन से होने वाले स्वास्थ्य लाभ के बारे में।

जामुन के फायदे-

1. मधुमेह के उपचार के लिए जामुन बहुत ही फायदेमंद माना जाता है। मधुमेह के रोगी जामुन की गुठलियों को सुखाकर, पीस

कर उनका सेवन करें। इससे शुगर का स्तर ठीक रहता है।

2. जामुन शरीर की पाचनशक्ति को मजबूत करता है। जामुन खाने से पेट संबंधित विकार कम होते हैं।

3. जामुन में एंटी कैंसर के गुण भी पाये जाते हैं। कीमोथेरेपी और रेडिएशन में भी जामुन फायदेमंद होता है।

4. जामुन का पका हुआ फल खाने से पथरी में फायदा होता है। जामुन की गुठली के चूर्ण को दही के साथ मिलाकर खाने से पथरी में फायदा होता है। लीवर के लिए जामुन का प्रयोग बहुत फायदेमंद होता है। कब्ज और पेट के रोगों के लिए जामुन बहुत फायदेमंद होता है।

5. मुंह में छाले होने पर जामुन के रस का प्रयोग करने से छाले समाप्त हो जाते हैं।

6. दस्त या खूनी दस्त होने पर जामुन बहुत फायदेमंद है। दस्त होने पर जामुन के रस को सेंधानमक के साथ मिलाकर खाने से दस्त होना बंद हो जाता है।

7. गठिया के उपचार में भी जामुन बहुत उपयोगी है। इसकी छाल को खूब उबालकर बचे हुए घोल का लेप घुटनों पर लगाने से गठिया में आराम मिलता है।

वित्त में अमृतत्व नहीं

पुरानी कहानी है। याज्ञवलक्य ऋषि के दो पत्नियां थीं। एक सामान्य, संसार में आसक्ति रखने वाली और दूसरी विवेकशील, जिसका नाम मैत्रेयी था। याज्ञवल्क्य को लगा कि अब घर छोड़कर आत्मचिंतन के लिए बाहर जाना चाहिए। जाते समय उन्होंने दोनों पत्नियों को बुलाया और कहा, 'अब मैं घर छोड़कर जा रहा हूं। जाने से पहले जो भी संपत्ति है, आप दोनों में बांट दूं।'

मैत्रयी ने पूछा- 'क्या पैसे से अमृत-जीवन प्राप्त हो सकता है?

याज्ञवल्कय ने जवाब दिया, 'नहीं, अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेनेंवित्त से अमृतत्व की आशा करना बेकार है। उससे तो वैसा जीवन बनेगा, जैसाकि श्रीमानों का होता है। वह तो मृत-जीवन है। अमृत-जीवन की अगर इच्छा है तो आत्मा की व्यापकता का अनुभव करो। सबकी सेवा करो। सबसे एकरुप हो जाओ।'

मासिक राशि भविष्यफल-अगस्त 2019

○ डॉ. एन.पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर शुभफलदायक है। सरकारी कर्मचारियों के लिये भी सन्तुष्टिदायक समय है। इस राशि के जातकों के लिए किसी नव निर्माण का प्रसंग आ सकता है। कुछ का रूका हुआ काम बनेगा। कार्यों में रूकावटें आएंगी किन्तु अन्ततः सफलता मिलेगी।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अर्न्तविरोध के चलते सफलता देने वाला हैं कुछ खर्चा भी विशेष होगा। राजनीति के क्षेत्र में इस राशि के जातक अपनी जगह बना पायेंगे। कुछ जातक कोई नया कार्य शुरू कर सकते हैं तो कुछ जातकों की पदोन्नति संभव है।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक आय तथा कम व्यय वाला है। कुछ जातकों का पिछला चला आ रहा ऋण भी चुकता हो जायेगा या रूका हुआ पैसा मिल जाएगा। विद्यार्थियों को भी अपने परिश्रम का सफल मिलेगा। मेहमानों की आवा-जाही लगी रहेगी। कुछ नई योजनाओं का क्रियान्वयन होने का समय है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभ की स्थिति लिये रहेगा। घर परिवार में चल रहे विरोध को शान्त करने में काफी ऊर्जा का व्यय होगा। कुछ जातकों को नव निर्माण होने से खुशी मिलेगी तथा कुछ को लंबित पड़ी यात्राएं पूरी होने की खुशी होगी। कुछ जातकों के यहां कोई अनुष्ठान आदि पूरा हो सकता है।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अवरोधों के चलते परिश्रमसाध्यलाभ देने वाला है। कुछ जातकों को अत्याधिक आर्थिक लाभ होगा किन्तु उन्हें पैसे का सही इस्तेमाल हो, यह सुनिश्चित करना पड़ेगा। कुछ नौकरी पेशा जातकों को पदोन्नति होने की खुशी हो सकती है।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिला कर शुभ फलदायक ही कहा जाएगा। व्यवसाय संबंधी कुछ यात्राएं भी होंगी जिनका सुफल मिलेगा। परिवार में छोटी-मोटी कहासुनी होगी जो सुलझ जाएगी। मानसिक तनाव से छुटकारा मिलेगा। आप नए कपड़े खरीद सकते हैं। आप नई योजनाओं में शामिल होंगे।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का प्रारंभ तथा अन्त लाभकारी है तथा मध्य उतना लाभकारी नहीं है। वैसे आय और व्यय में संतुलन बना रहेगा। कुछ जातकों के लंबित पड़े भूमि-भवन के फैसलों का भी समय है जो इनके पक्ष में होगा। मित्रों और परिवारजनों में आपकी साख बनी रहेगी। सामाजिक कार्यों में जनता का सहयोग मिलेगा।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह काग चेष्टा रखने का है। लाभ के अवसर को हाथ से जाने न दें। ऐसा लगेगा कि आर्थिक लाभ होगा, किंतु यदि समय का सदुपयोग न किया तो हाथ में आता-आता पैसा रूक जाएगा। सरकारी कर्मचारियों को उनके अधिकारियों की मदद मिलेगी। कुछ सूचनाएं इस प्रकार भी मिलेंगी। मानसिक चिंता बनेगी।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम एवं संघर्ष के चलते अन्य लाभ देने वाला है। किसी के साथ हंसी-मजाक करते हुए अपनी सीमा को न लांघें। भौतिक वस्तुओं की खरीद की होड़ के चक्कर में न पड़ें। इन जातकों के भूमि-भवन संबंधी समस्या का कोई हल निकल आएगा। अपने बुजुर्गों का सम्मान करें।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। हां राजनीतिक लोगों को अधिक फायदा होगा। उनका वर्चस्व बढ़ेगा। शत्रु परास्त होंगे। घर परिवार में शांति व सामन्जस्य बना रहेगा। दाम्पत्य जीवन में कुछ कटुता आएगी, किन्तु कोई हल निकल आएगा। ये जातक यात्रा तो करें पर इस माह पहाड़ी यात्रा न करें।

कुंभ- कुंभ राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। इस माह के आरम्भ तथा अन्त में शुभ फल मिलेंगे तथा मध्य में मिश्रित फल मिलेंगे। सरकारी कर्मचारियों को उनके अधिकारियों की मदद मिलेगी। मुकदमें आदि में सफलता मिलेगी। जब अशुभ फल मिलेगा तो खर्चा अधिक होगा। मानसिक चिंता बनी रहेगी। कोई अकारण विवाद भी हो सकता है।

मीन- मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभफलदायक नहीं है। शरीर में अस्वस्थता के कारण कार्य में पूरा ध्यान नहीं दे पायेंगे, ऐसा लगता है। पीलिया, मलेरिया, आदि रोग घेर सकते हैं, कुछ लोग पेट की वजह से परेशान रहेंगे। ये जातक मुकदमे आदि में विजय प्राप्त कर सकते हैं। वाहन सावधानी से चलाएं।

जहां एक ही छत के नीचे सभी जैन संप्रदाय करते हैं अपनी पूजा-आराधना

-आचार्य रूपचन्द्र

4-7 जुलाई, लॉस एंजिलस, केलिफोर्निया, ए.एस.ए. में 20वें द्विवर्षीय जैना कन्वेंशन को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्र जी ने कहा- सन् 1952 से सन् 1990 तक मुनि-विक्षा के 38 वर्ष लगभग 50 हजार किलोमीटर की पद-यात्राओं में भारत, नेपाल के करीब सभी महानगरों/प्रांतों में जाना हुआ। इन्हीं यात्राओं के बीच दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी तथा तेरापंथी धर्म-स्थलों में ठहरने का अवसर मिला। मैंने पाया भगवान महावीर और जैन-धर्म के नाम पर हर धर्म-स्थल में पूजा-आराधना अपनी-अपनी पंथ-मान्यताओं की हो रही है। इसलिए मुझे लिखना पड़ा-

स्थानक मिले, मंदिर मिले,
महावीर नहीं मिले
अहं भरे आडम्बर मिले,
महावीर नहीं मिले
बहुत-बहुत खोजा हमने
वीतराग महावीर मिले
श्वेताम्बर मिले, दिगम्बर मिले,
महावीर नहीं मिले।

इतना ही नहीं, मैंने यह भी देखा, छोटा-सा जैन समाज, उसमें भी इतनी-इतनी दीवारें, तभी भीतर का दर्द कविता में फूट पड़ा-

घर छोटा-सा है उसमें भी
दीवारें ही दिवारे हैं
सबकी अपनी अलग बोलियां,
अलग-अलग अपने नारे हैं
जहां नहीं है इतना-सा आकाश कि
जिसमें सांस ले सकें।
वहीं बताया गया आज तक
सूरज है चंदा-तारे हैं।

सन् 1991 में आदरणीय आचार्य सुशील मुनिजी के आमंत्रण पर अमेरिका की धरती पर आना हुआ। यहां मैंने देखा जैन सेंटर के बैनर तले एक ही छत के नीचे दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथी आदि संप्रदायों के लोग अपने-अपने विश्वास के अनुरूप पूजाएं, सामायिक आराधना कर रहे हैं तो मुझे सुखद आश्चर्य हुआ। कहीं कोई विवाद नहीं, कहीं कोई टकराव नहीं, कहीं कोई अपनी सांप्रदायिक मान्यता का आग्रह नहीं। यही तो है भगवान महावीर का अनेकान्त-दर्शन, जिसके दर्शन मुझे भारत की धरती पर नहीं मिले,

अमेरिका की धरती पर मिले। उसी में से इस मुक्तक की रचना हुई-

स्थानक भी मिले, मंदिर भी मिले,
महावीर भी मिले
पूजाएं भी मिली, सामायिक संवर भी मिले,
महावीर भी मिले
अमेरिका की धरती पर एक ही छत के नीचे
श्वेताम्बर भी मिले, दिगम्बर भी मिले,
इसलिए महावीर मिले।

आपने कहा- भगवान महावीर और जैन एकता का दूसरा उदाहरण है हर दूसरे वर्ष होने वाला जैना कन्वेंशन, जिसके बीसवें अधिवेशन में हम भाग ले रहे हैं। भारत में हर पंथ/संप्रदाय के वार्षिक अधिवेशन होते हैं, जिसमें उस पंथ/संप्रदाय के अनुयायी होते हैं। ऐसा एक भी कन्वेंशन नहीं, जिसमें संपूर्ण जैन समाज की उपस्थिति होती है, जिसमें केवल और केवल भगवान महावीर के चिंतन-दर्शन की चर्चा होती हो। मैं दावे से कह सकता हूं भारत में जैन शब्द से पहले अपने-अपने पंथ संप्रदाय जुड़े हैं, भगवान महावीर से पहले अपने-अपने आचार्य और गुरूओं के नाम जुड़े हैं। इस स्थिति में वहां भगवान महावीर के वीतराग-धर्म के दर्शन कैसे संभव है। अंत में आपसे यही कहना चाहूंगा- एक ही छत के नीचे धर्म-आराधना ओर एक ही बैनर तले जैना-कन्वेंशन- इस परंपरा को सहेज कर रखना है, किसी भी कीमत पर इस पर आंच नहीं आने देना है- संकल्प लें-

धर्म को संप्रदाय का गुलाम नहीं होने देंगें
सच को झूठ के हाथों बदनाम नहीं होने देंगे
हिम्मत के साथ संकल्प लें किसी कीमत पर
अंधेरे के हाथों रोशनी को नीलाम नहीं होने देंगे।

उपस्थित जन-समुदाय ने पूज्य आचार्यश्री के उद्‌बोधन-प्रवचन का करतल ध्वनि के साथ जोरदार स्वागत किया। शिष्य अरूण योगी की योगा कक्षाएं कन्वेंशन के आकर्षण बनी हुई थी। चार-दिवसीय जैना कन्वेंशन में हजारों-हजारों लोगों की उपस्थिति में अनेक धर्म-विभूतियों एवं विद्वान मनीषियों के सारगर्मित प्रवचन हुए। पूज्यवर गुरूदेव तथा श्री अरूण योगी की सम्मान तथा गरिमापूर्ण सेवाएं समाजसेवी श्री महेन्द्र सिंह सुनीलजी डागा परिवार सम्हाले हुए थे। कन्वेंशन के पश्चात् 8 जुलाई को सेन् होजे, सेन् फ्रेंसिस्को पूज्यवर पधार गए, यहां के साप्ताहिक प्रवास को सफल सार्थक बनाने में डॉ. प्रवीण नीरज जैन की प्रशंसनीय सेवाएं रही वहां से धर्म-यात्रा टेक्सास की ओर मुड़ गई। 15 जुलाई से 30 जुलाई के बीच महानगर डलास, मिड-लैण्ड, वेको, आस्टिन और ह्युष्टन महानगर आदि शहरों में सर्वत्र योग-कक्षाएं और प्रवचनों का समाज ने

भरपूर लाभ लिया। हर शहर में मावन मंदिर मिशन की शिक्षा, सेवा और योग-विद्या विचार-धारा से जुड़े निष्ठाशील सक्षम, समर्थ एवं समर्पित व्यक्तियों की तीव्र इच्छा है इस मिशन की प्रवृत्तियों का अमेरिका की धरती पर नियमित रूप से संचालन हो। पर यह सब समय के परिपाक के साथ ही संभव है। शेष धर्म-यात्रा अगले अंक में आप पढ़ सकेंगे।

मानव मंदिर मिशन, नई दिल्ली में पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्री जी के मार्ग-दर्शन में सहयोगी साध्वियों द्वारा सभी प्रकल्प मानव मंदिर गुरूकुल, सेवा-धाम प्रगति-पथ पर है। हिसार, सुनाम, मानव मंदिर के सेवा-कार्य भी सुचारू रूप से चल रहे हैं।

-एस.आर.एम. ग्रुप के चेयरमैन के जन्म दिवस समारोह में साध्वी समताश्री जी के साथ मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चे।

-20वें जैना सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में पहली पंक्ति में संत-वृंद और पीछे बैठा विशाल जन-समुदाय जैना कन्वेंशन लॉस ऐंजेलेस, (अमेरिका 2019)।

-जैना कन्वेंशन लॉस ऐंजेलेस में श्री योगी अरुण जी की योग-कक्षा के पश्चात। छाया चित्र में योगीजी के साथ योग-साधक।

-20वें जैना कन्वेंशन लॉस ऐंजेलेस 2019 में शोभा यात्रा, ओपेन कार द्वारा की गई। ओपेन कार में विराजमान है पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज व श्री अरुण योगी जी।

श्री सुरेश उर्वशी पटेल के आवास धर्म चर्चा के पश्चात पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए भक्त-गण।

-पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज के साथ विद्यमान हैं सदगुरु जग्गी वासुदेव जी व श्री अरुण योगी जी। स्थान- कन्वेंशन सेंटर ऑनटारियो, लॉस ऐंजेलेस।

-मिडलैंड, टेक्सास, में प्रवचन व योग के बाद पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए भक्त गण।

-प्रवचन और योग-साधना के पश्चात पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए सेन होजे का भक्त-समुदाय।

-रूपांतरण योग ध्यान के पश्चात छाया चित्र में योगी जी के साथ मिल्पीटस, कैलिफोर्निया के योग-साधक।

-जैना कन्वेंशन में पूज्य गुरुदेव के साथ अन्य साधु-साध्वी भाग लेते हुए।

-ऑस्टिन, टेक्सास में पूज्य गुरुदेव के प्रवचन और योगी जी की ब्रह्म-क्रिया कक्षा के पश्चात ऑस्टिन योग-ग्रुप के साधक पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2018-20
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

SEVA-DHAM Plus

Since 1994

.....The Wellness Retreat

(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)

KH-57, Ring Road, (Behind Indian Oil Petrol Pump), Sarai Kale Khan, New Delhi - 110013
Ph. : +91-11-2632 0000, +91-11-2632 7911 Fax : +91-11-26821348 Mob. : +91-9868 99 0088, +91-9999 60 9878
Website : www.sevadham.info E-mail : contact@sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया